ISSN 2278-8808
An International Peer Reviewed
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

हिन्दी व अंगेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन

शालिनी त्यागी, Ph. D.

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक विभाग, मेरठ कॉलिज मेरठ।

प्रस्तावना

भाषा, व्यक्ति व राष्ट्र की पहचान होती है। राष्ट्र की अस्मिता, सांस्कृतिक वैभव तथा बौद्धिक विकास की द्योतक भाषा ही है क्योंकि व्यक्ति अपने विचारों व मनोभावों की अभिव्यक्ति मुख्यतः भाषा के माध्यम से करता है। शिक्षा की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में भाषा की अहम् भूमिका है। इसके द्वारा ही अध्ययन और अध्यापन का कार्य सम्पन्न होता है। शिक्षक, विद्यालय का वातावरण, कार्य प्रणाली, पाठ्यक्रम और पाठ्य सहभागी क्रियाओं सभी का लक्ष्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। यह सभी प्रक्रियायें भाषा के द्वारा सरलता से संचालित होती हैं।

भारत में विद्यालयों में प्रदान की जाने वाली शिक्षा मुख्य रूप से दो भाषाओं के माध्यम से दी जाती है–हिन्दी भाषा व अंग्रेजी भाषा। हिन्दी भाषा के विद्यालयों के सभी क्रिया कलाप (पाठ्यक्रम सम्बन्धी और पाठ्येत्तर) प्रायः हिन्दी में ही सम्पन्न होते हैं जबकि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व रहता है। शैक्षिक उपलब्धि, बुद्धि मूल्यों आदि आयामों पर शिक्षा के माध्यम के संदर्भ में विभिन्न शोध किये गये।

बोकल (1956) द्वारा दिये गये शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शिक्षा का माध्यम उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

दवे व आनन्द (1972) ने विद्यार्थियों की मानसिक शक्ति व शैक्षिक उपलब्धि पर भाषाभार के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि मातृभाषा या अन्य भाषा (अंग्रेजी व प्रादेशिक) में शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों की शाब्दिक, अशाब्दिक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता

चतुर्वेदी (2001) ने विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के गुण, नैतिक मूल्यों और चेतना का अध्ययन किया जिसमें हिन्दी माध्यम के सरस्वती शिश मन्दिर के छात्र, व छात्राओं में सृजनात्मक योग्यता, नैतिक मूल्य और राष्ट्रीय चेतना सबसे अधिक पाई – जबकि पश्चिमी संस्कृति के विद्यालयों के विद्यार्थी इस दृष्टि से द्वितीय स्थान पर पाए गए।

पाण्डेय (2002) ने शोध अध्ययन में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की विज्ञान विषय की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया।

श्रीवास्तव व अस्थाना (2002) ने शोध के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि हिन्दी माध्यम में अध्ययनरत किशोरों में अंग्रेजी माध्यम के किशोरों की अपेक्षा अधिक धार्मिक मूल्य होते है।

प्रस्तुत शोध में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना उनके भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान के संदर्भ में की गयी है क्योंकि यह एक सामान्य धारणा दिखाई देती है कि हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थी अपनी (भारतीय) संस्कृति–मूल्यों, आचार–विचार, रहन–सहन, परम्परा, रीतिरिवाज से अधिक प्रभावित रहते हैं और उनका भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान भी अधिक होता है जबकि अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी पाश्चात्य संस्कति के प्रति सकारात्मक आग्रह रखते हैं और इन विद्यालयों के क्रियाकलापों में अंग्रेजी भाषा व पाश्चात्य संस्कृति प्रभावी दिखायी देती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान की तुलना करना।
2. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों (लड़कों) के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान की तुलना करना।
3. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की छात्रो (लड़कियों) के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान की तुलना करना।
4. विद्यालयों तथा विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान के संरक्षण व सम्वर्द्धन हेतु सुझाव देना।

शोध परिकल्पनामा

1. हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों का भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों से उच्च है।
2. हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों (लड़कों) का भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों (लड़कों) से उच्च है है।
3. हिन्दी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं (लड़कियों) का भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं (लड़कियों) से उच्च है।

शोध में प्रयुक्त विधि ,

शोध अध्ययन के विषय व स्वरूप को देखते हुए शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श

शोध अध्ययन मुजफफ्रनगर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा द्वादश के 360 विद्यार्थियो तक सीमित रखा गया।

विद्यालयों का चयन म जिला विद्यालय निरीक्षक, मुजफफ्रनगर कार्यालय सत्र तक, कानपुर नगर कार्यालय से प्राप्त सूची के आधार पर कुल 337 विद्यालयों में हिन्दी माध्यम के 295 विद्यालय तथा अंग्रेजिी माध्यम के 42 विद्यालय प्राप्त हुए। तत्पश्चात् प्रत्येक वर्ग से लाटरी विधि द्वारा तीनों हिन्दी माध्यम के सरकारी, सहायता प्राप्त, स्ववित्तपोषित विद्यालय) व (अंग्रेजी माध्यम के मिशनरी, सेन्ट्रल, स्ववित्तपोषित विद्यालय के कुल 15 विद्यालयों का चयन किया गया।

छात्रों का चयन

चयनित विद्यालयों की कक्षा द्वादश के उपस्थिति रजिस्टर से हिन्दी माध्यम के विद्यालयों से कुल 180 विद्यार्थियों (90 छात्र, 90 छात्रायें अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों से 180 विद्यार्थियों (90 छात्र, 90 छात्रायें) का चयन लाटरी विधि द्वारा किया गया। इस प्रकार कुल 360 विद्यार्थियों का चयन अध्ययन हेतु किया गया।

न्यादर्श का वितरण

शिक्षा का माध्यम/विद्यार्थी	हिन्दी माध्यम	अंगेजी माध्यम	योग
छात्र	90	90	180
छात्रायें	90	90	180
योग	180	180	360

प्रयुक्त उपकरण

विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान के स्तर का मापन करने के लिए डॉ. अग्रवाल एवं डॉ. शुक्ला (2001) के द्वारा निर्मित 'भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षण' का प्रयोग किया गया। इस परीक्षण में कुल 30 पद हैं तथा समय 30 मिनट निर्धारित है। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। इस परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक अर्द्ध विच्छेद विधि से 0.84 प्राप्त हुआ। विषय विशेषज्ञों की राय के आधार पर इस परीक्षण की वैधता निर्धारित की गयी।

आँकड़ों का संग्रहण

विद्यालयों के प्रधानाचार्यगण को शोध के उद्देश्य से परिचित कराया तथा उनकी अनुमति से वहाँ के शिक्षकों का सहयोग लेकर विद्यार्थियों पर 'भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षण' का प्रशासन पर समयावधि व्यतीत होने पर परीक्षण प्रपत्र वापस ले लिया।

फलांकन

निराश ''भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षण' में प्रत्येक प्रश्न एक अंक का है। प्रश्न का उत्तर पूर्ण रूप से सही होने पर अंक प्रदान किया गया। अनिशिचित व गलत उत्तर के लिए शून्य अंक प्रदान किया गया। इस प्रकार प्रत्येक विद्यार्थी के उत्तर प्रपत्र का मूल्यांकन कर कुल प्राप्तांक ज्ञात किये गये।

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण तथा विवेचना

प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण निम्न शून्य परिकल्पनाओं के आधार पर पर किया गया।

1. हिन्दी व अंगेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों के भारतीय सम्बन्धी ज्ञान से सार्थक अन्तर नहीं है।
3. हिन्दी व अंगेजी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए माध्यमानों के प्राप्त अन्तर की तुलना क्रान्तिक अन्तर से की गई।

हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान के मध्यमान के बीच अनतर व क्रानितक अन्तर की तालिका–1 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका–1

भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान के संदर्भ में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना

क्रम सं0	समूह	मध्यमान	मध्यमानों के बीच अन्तर	अन्तर की प्रामाणिक त्रुटि	स्वतन्त्रता के अंश (df)	क्रान्तिक अन्तर .05	निष्कर्ष
1.	हिन्दी माध्यम	14.98					.05 स्तर
2.	अंग्रेजी माध्यम	13.59	1.39	.463	358	.910	पर सार्थक

तालिका–1 में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान के माध्यमान क्रमशः 14.98 तथा 13.59 प्रदर्शित हैं। दोनों मध्यमानों के बीच 1.39 अंक का अन्तर है। अन्तर की सार्थकता की जांच करने के लिए क्रान्तिक अन्तर से तुलना की गयी जिसमें पाया गया कि हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के मध्यमान का अन्तर (1.39) क्रान्तिक अन्तर (.910) से अधिक है अतः यह .05 स्तर पर सार्थक है।

निष्कर्षतः शून्य परिकल्पना 'हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं हैं .05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों से उच्च है' स्वीकृत की जाती है।

हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान के मध्यमानों के बीच अन्तर व क्रान्तिक अन्तर को तालिका–2 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका–2

भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान के संदर्भ में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों की तुलना

क्रम सं0	समूह	मध्यमान	मध्यमानों के बीच अन्तर	अन्तर की प्रामाणिक त्रुटि	स्वतन्त्रता के अंश (df)	क्रान्तिक अन्तर .05	निष्कर्ष
1.	हिन्दी माध्यम के छात्र	16.46	2.11	.654	178	1.28	.05 स्तर पर सार्थक
2.	अंग्रेजी माध्यम के छात्र	14.35					

तालिका–2 से स्पष्ट है हिन्दी माध्यम के छात्रों का मध्यमान 16.46 तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों का मध्यमान 14.35 है। मध्यमानों के बीच 2.11 का अन्तर है। इस अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए क्रान्तिक अन्तर से तुलना करने पर पाया गया कि मध्यमानों के बीच का अन्तर (2.11) क्रान्तिक अन्तर (1.28) से अधिक होने के कारण .05 स्तर पर सार्थक है।

निष्कर्षतः शून्य परिकल्पना 'हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के छात्रों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं हैं, .05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है तथा शोध परिकल्पना 'हिन्दी माध्यम के छात्रों का भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के छात्रों से उच्च है' स्वीकृत की जाती है।

परिणाम यह दर्शाते हैं कि–

1. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा सार्थक रूप से उच्च है।
2. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों विशेष रूप से छात्रों का भारतीय संस्कृति ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के छात्रों से उच्च है।

हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का भारतीय संस्कृति ज्ञान उच्च होने के मुख्य कारण है–

(क) हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के पाठ्यक्रम के अधिकांश अंश भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित होते हैं।

(ख) विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन भी इस तरह से किया जाता है कि विद्यार्थियों को अधिक से अधिक भारतीय संस्कृति का ज्ञान हो सकें।

(ग) विद्यालयों का भौतिक वातावरण (आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट) इस प्रकार रखने का प्रयास किया जाता है कि विद्यार्थी भारतीय महापुरुषों, आदर्शों, सिद्धान्तों और विचारों से

परिचित हो सकें। इसके लिए विद्यालयों में पोस्टर, चित्र, स्लोगन, महापुरुषों के चित्र आदि लगाये जाते हैं।

इस प्रकार इन विद्यालयों की अधिकांश क्रियाओं का संचालन भारतीय संस्कृति के अनुसार होता है।

हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान के मध्यमानों के बीच अन्तर व क्रान्तिक अन्तर को तालिका–3 में प्रदर्शित किया है।

तालिका–3

भारतीय संस्कृति ज्ञान के संदर्भ में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं की तुलना

क्रम सं0	समूह	मध्यमान	मध्यमानों के बीच अन्तर	अन्तर की प्रामाणिक त्रुटि	स्वतन्त्रता के अंश (df)	क्रान्तिक अन्तर .05	निष्कर्ष
1.	हिन्दी माध्यम के छात्र	16.46	2.11	.654	178	1.28	.05 स्तर पर सार्थक
2.	अंग्रेजी माध्यम के छात्र	14.35					

तालिका 3 में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान के मध्यमान क्रमशः 13.50 तथा 12.83 प्रदर्शित है। दोनों मध्यमानों के बीच .67 का अन्तर पाया गया। अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए क्रान्तिक अन्तर से तुलना की गई। स्पष्ट है कि छात्राओं के मध्यमानों के बीच का अन्तर (.67) क्रान्तिक अन्तर (1.28) से कम होने के कारण .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

निष्कर्षतः शून्य परिकल्पना 'हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं है', .05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है तथा शोध परिकल्पना 'हिन्दी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं का भातरीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की छात्राओं के उच्च है' अस्वीकृत हो रही है।

दोनों माध्यम की छात्राओं के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान में अन्तर न होने का एक बड़ा कारण यह है कि छात्रायें अपने घर व परिवार से बहुत निकट से जुड़ी होती हैं। छात्रायें अधिकांशतः अपनी माता से अधिक प्रभावित होती हैं। वे परिवार में पर्वों, त्यौहारों आदि की तैयारी करने, उनको मनाने में अधिक रुचि लेती हैं। छात्रायें विद्यालय में भी विभिन्न पाठ्य सम्बन्धी तथा पाठ्येत्तर क्रियाओं में अधिक सक्रियता से भाग लेती है। जिससे छात्राओं के अन्दर भरतीय संस्कृति के प्रति अधिक श्रद्धा होती है तथा उन्हें भारतीय संस्कृति का ज्ञान भी अपेक्षाकृत अधिक होता है।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद का कथन, "देश की संस्कृति केवल महिलाओं के कारण सुरक्षित है" प्राप्त निष्कर्ष की पुष्टि करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यकीय विश्लेषण व विवेचना से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का भारतीय संस्कृति ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की तुलना में उच्च प्राप्त हुआ।
2. हिन्दी माध्यम के छात्रों का भारतीय संस्कृति ज्ञान अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की तुलना में उच्च प्राप्त हुआ।
3. भारतीय ज्ञान की दृष्टि से हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम की छात्रायें समान हैं।

सुझाव

अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों के भारतीय संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान के सम्वर्द्धन हेतु निम्न सुझाव प्रेषित हैं–

(क) भारतीय संस्कृति को महत्व देते हुए विभिन्न प्रकार की पाठ्य सम्बन्धी तथा पाठ्येत्तर क्रियायें–नाटक, वाद–विवाद, अन्त्याक्षरी, कविता, कहानी प्रतियोगिता नियमित रूप से आयोजित की जानी चाहिए।

(ख) समय–समय पर विद्या भारतीय से सम्बद्ध संस्थाओं से परामर्श लेकर 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' का आयोजन करना चाहिए।

(ग) शिक्षकों को भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेरित रख कर उन्हें प्रशिक्षित किया जाए कि उनके व्यक्तित्व, व्यवहार व शिक्षण कार्य के माध्यम से विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति का ज्ञान होता रहे।

(घ) भौतिक वातावरण (Organisational Climate) सम्बन्धी परिमार्जन किया जाय जिससे विद्यार्थी भारतीय महापुरुषों, आदर्शों, सिद्धान्तों और विचारों से परिचित हो सकें, इसके लिए विद्यालय में पोस्टर, चित्र, स्लोगन, महापुरुषों के चित्र आदि का प्रभावी प्रयोग हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

चतुर्वेदी, अर्चना, (2001): 'पर्सनलिटि पैटर्न, मॉरल वैल्यूज एण्ड नेशनल अवेकनिंग अमंग स्टयूडेन्ट्स स्टीईंग इन स्कूल्स ऑफ डिफरेन्ट कल्चरल एसोसिएशन' इण्डियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च 20 (2), पृ0 सं0 45–51,

दवे, पी0एन0 आनन्द, सी0 एल0 (1971) : 'द लोड ऑफ लैग्वेंज लर्निंग इंटेलीजेन्स एण्ड ऐकेडमिक एचीवमेन्ट' बुच, एम0 बी0, सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च दन एजुकशेन, 1972–78, नई दिल्ली: रा0शै0अ0प्र0प0, पृ0 सं0 345,

पाण्डेय, आभा (2002) : 'ए स्टडी ऑफ इंग्लिश नीड्स ऑफ साइंस स्टयूडेंट्स एट ग्रजुएट लेवेल' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 21 (2) पृ0 सं0 40–44,

बोकिल, एस0 आर0 (1956) : 'द इम्पैक्ट ऑफ डिफरेन्ट मीडिया ऑन द परफारमेन्स ऑफ स्टयूडेन्ट अपियरिंग फॉर द एग्जॉमिनेशन ऑफ मार्च 1955 एण्ड ऑलसो ऑन द परसेन्टेज ऑफ फेलियर' बुच, एम0 बी0, सकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च दन एजुकेशन, 1972–78, नई दिल्ली रा0 शै0 अ0 प्र0 प0, पृं0 सं0 374,

श्रीवास्तव, सुषमा व अस्थाना, शालिनी (2002) : 'अंग्रेजी माध्यम एवं हिन्दी माध्यम में पढ़ने वाले किशोरों के आत्म–प्रत्यय एवं मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 21 (2) पृ0 सं0 45–51,